

प्रदूषण एवं जनजीवन

समुद्र, धरती से लेकर अंतरिक्ष में तमाम उपलब्धियों के बाद भी आज मनुष्य को सांस लेने के लिए न तो शुद्ध हवा है और न पीने के लिए साफ पानी है। खाद्य पदार्थ भी प्रदूषित हो चुके हैं। उनमें ऐसे जहरीले कीटनाशक और रसायन प्रवेश कर चुके हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए जानलेवा साबित हो रहे हैं।

दुनिया की बड़ी आबादी दूषित हवा में सांस लेने को विवश है। इससे हर साल छह लाख बच्चों सहित करीब सत्तर लाख लोगों की असमय मौत हो जाती है।

पर्यावरण और मानवाधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ डेविड बॉयड के अनुसार दुनिया की करीब छह अरब आबादी दूषित आबोहवा में सांस ले रही है, जिससे उसकी जिंदगी और सेहत खतरे में पड़ गई है। इसमें एक तिहाई बच्चे हैं।

कई साल प्रदूषित हवा में सांस लेने के कारण लोग कैंसर, सांस की बीमारी और हृदय रोग से पीड़ित हो रहे हैं। इससे हर घंटे आठ सौ लोगों की मौत हो रही है। इसके बावजूद इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा।

वायु प्रदूषण हर जगह है। इसके प्रमुख कारणों में बिजली के लिए जीवाश्म ईंधन जलाना, परिवहन और औद्योगिक गतिविधियों के अलावा खराब कचरा प्रबंधन और कृषि संबंधी कार्य हैं।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) पिछले साल विश्व में सर्वाधिक प्रदूषित क्षेत्र में रूप में उभरा है।

रिपोर्ट ग्रीनपीस साउथ-ईस्ट एशिया के सहयोग से तैयार की गई है। इसमें कहा गया कि विश्व के बीस सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से 18 शहर भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के हैं। राजधानी दिल्ली ग्यारहवें नंबर पर है।

कभी दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शामिल रही चीन की राजधानी बीजिंग पिछले साल सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में एक सौ बाईसवें नंबर पर थी, लेकिन वह अब भी विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की सालाना सुरक्षित सीमा से कम से कम पांच गुना अधिक प्रदूषित शहर है। तीन हजार से अधिक शहरों में प्रदूषक कण (पीएम) 2.5 के स्तरों को दर्शाने वाला डाटाबेस एक बार फिर वायु प्रदूषण से विश्व को खतरे की याद दिलाता है।

औद्योगिक विकास के साथ-साथ पराली, कूड़ा जलाने और पटाखों से भी प्रदूषण की समस्या गंभीर बनी है। आज हमारे पास सांस लेने के लिए न शुद्ध हवा है और न पीने के लिए साफ पानी है। अमेरिका के इंटरनेशनल फूड पालिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट के एक अध्ययन के अनुसार पराली से होने वाले प्रदूषण की वजह से भारत को इक्कीस हजार करोड़ रुपए का नुकसान हर साल हो रहा है।

जहरीली हवा से बच्चों में फेफड़ों से संबंधित बीमारियों का खतरा भी बढ़ रहा है। पराली जलाने और इससे होने वाले प्रदूषण से प्रभावित क्षेत्रों में रहने वाले लोग खासतौर पर पांच साल से छोटे बच्चों में इसकी वजह से एक्यूट रेस्पिरैटरी इनफेक्शन (एआरआई) का खतरा तेजी से बढ़ रहा है।

पिछले पांच सालों के दौरान पराली और पटाखों की वजह से देश को जितना नुकसान हुआ है, वह भारत के जीडीपी के 1.7 फीसद के करीब है।

सर्दियों में पराली जलाने की वजह से कुछ दिनों तक दिल्ली में पीएम (पार्टिक्यूलेट मैटर) का स्तर डब्ल्यूएचओ के मानकों से बीस गुना तक ज्यादा बढ़ जाता है।

इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) की पिछले दिनों जारी एक रिपोर्ट के अनुसार 2017 में देश में लगभग 12.4 लाख लोगों को प्रदूषित हवा के चलते जान से हाथ धोना पड़ा था। यदि वायु प्रदूषण कम होता तो लोगों की जीवन प्रत्याशा 1.7 साल ज्यादा होती।

इसके कारण लोग तंबाकू के इस्तेमाल की तुलना में बीमार भी कहीं ज्यादा हो रहे हैं। लैनसेट प्लैनेटरी हेल्थ जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण दुनियाभर में समय-पूर्व मृत्यु दर अठारह फीसद है।

अमेरिका के यूटा विश्वविद्यालय में हुए एक शोध के मुताबिक वायु प्रदूषण के संपर्क में थोड़ी देर के लिए भी आने से गर्भपात का खतरा बढ़ सकता है।

पर्यावरण अवनयन का दुष्प्रभाव

पर्यावरण में खतरनाक परिघटनाएं सामने आ रही हैं जो पृथ्वी की शक्ल-सूरत को मूलतः बदल सकती हैं और पशु जगत की अनेक जातियों तथा स्वयं मानव वंश के अस्तित्व को खतरे में डाल सकती हैं।

ऊसर बनी ऐसी जमीन का क्षेत्रफल तीस साल में लगभग सऊदी अरब के क्षेत्रफल के बराबर होगा। प्रति वर्ष एक करोड़ दस लाख से अधिक हेक्टेयर वन उजाड़ दिए जाते हैं।

अम्लीय वर्षा मानवजाति के लिए विपदा बन गई है। जलाशयों में पड़ कर वह सब जंतुओं और वनस्पति को समाप्त कर देती है। खनिज ईंधन जलाने के फलस्वरूप कार्बन डाइक्साइड वायुमंडल में उत्सर्जित हो जाती है, जिससे जलवायु विश्वव्यापी पैमाने पर धीरे-धीरे गरम हो रही है।

दुनिया के कई इलाकों में भयंकर तूफान, बारिश, बाढ़, प्रलय जारी है। शताब्दी के अंत तक औसत भौगोलिक तापमान इतना बढ़ेगा कि कृषि क्षेत्र में बुनियादी परिवर्तन आ जाएंगे, ध्रुवीय प्रदेशों के हिम-खंड पिघलने के कारण सागरों की सतह ऊँची हो जाएगी और तटवर्ती नगर डूब जाएंगे।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय

1. राष्ट्रीय उत्सर्जन व्यापार प्रणाली लागू किया जाना चाहिए।
2. वाहनों को पर्यावरण अनुकूल होना चाहिए।
3. इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
4. विद्युत क्षेत्र में आवश्यक सुधार करके उत्सर्जन को कम करना चाहिए।
5. औद्योगिक वायु प्रदूषण सुधार हेतु विनियामक ढांचे का निर्माण किया जाना चाहिए।
6. फसल अवशेष का उपयोग करने हेतु एक व्यापार मॉडल कार्यान्वित करना चाहिए।
7. एकीकृत अपशिष्ट प्रबंधन नीति लागू करना चाहिए।
8. घरेलू ईंधन उपयोग के स्रोतों को स्वच्छ ईंधन (पर्यावरण अनुकूल) को प्रोत्साहित करना चाहिए।
9. व्यवहार परिवर्तन हेतु जागरूकता अभियान को बढ़ावा देना चाहिए।
10. राष्ट्रीय, क्षेत्रीय स्तर पर पर्यावरण अनुकूल योजनाओं का विकास करना होगा।
11. वायु गुणवत्ता निगरानी प्रणाली में सुधार करना।
12. वर्तमान ईंधन मानकों का पालन किया जाना चाहिए।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न-

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. दुनिया के बीस सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से पंद्रह भारत के हैं।
2. IQ एयरविजुअल, वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट प्रकाशित करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न का उत्तर:- (C)

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न- आधुनिक विकास की अवधारणा में सतत विकास का आयाम विश्व में कल्याणकारी राज्यों का भविष्य है विकास के मार्ग पर आगे बढ़ते विश्व के सम्मुख चुनौति परंपरागत विनाश के हथियार नहीं, बल्कि प्रदूषण की भयावह होती स्थिति है। उपर्युक्त कथन के संदर्भ में प्रदूषण का जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा करते हुए इनसे निपटने के वैकल्पिक उपायों पर विश्लेषण करें।



